पहले2 तो बाबा कहते हैं कि आत्माभिमानी होकर बैठो। आत्मअभिमानी को आस्तिक कहा जाता है। देहअभिमानी हैं सभी भक्तिमार्ग वाले। देहीअभिमानी हैं ज्ञान वाले। तुम आस्तिक भी हो तो त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी भी हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाय बाप के और कोई दे नहीं सकते हैं। वो ही ज्ञान का सागर है। वो ही आकर रास्ता बताते हैं। त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी फिर कहते हैं त्रिलोकीनाथ। अब त्रिलोकीनाथ तो कोई होता नहीं है। सूक्ष्मवतन का नाथ होता नहीं है। नाथ हो तो नाथिनी भी हो। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा और विष्णु तो हैं यहां के। बाकी यह है शंकर। उनका तो कोई पार्ट ही नहीं है। यह भक्तिमार्ग वालों ने चित्र बना रखे हैं। बाकी सच्चे2 चित्र कौन से हैं?हां2 शिव का चित्र ठीक है। विष्णु और ब्रह्मा भी स्थूल लोक में आ जाते हैं। शंकर की तो कोई बात ही नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु,विष्णु सो ब्रह्मा फिर बड़ी2 कहानी हो जाती है। पार्वती की कोई कथा सुनाई ही नहीं है। कथा सुनाई है तो शिवबाबा ने ही सुनाई है। शंकर को अमर नहीं कहेंगे। अमर है शिवबाबा। तो यह सब भक्तिमार्ग के गपोड़े हैं। भक्तिमार्ग है दुर्गति मार्ग। ज्ञान मार्ग का तो उनको पता ही नहीं है। गाते भी हैं कि सदगति दाता परमपिता परमात्मा ही है। तो गुरू भी तो और किसी को कह नहीं सकते हैं ना। उनको साधना करने वाले साधु कहा जाता है। भक्तिमार्ग के गुरू हैं। तुम्हारा तो अब भटकना बंद हो गया है। तुम बहुत सुखाली कमाई कर रहे हो। और कोई कमाई नहीं करवाते हैं। वो शास्त्र आदि तो सभी हैं भक्तिमार्ग के। दण्ड (दंत)कथायें पढ़ते रहते हैं। तुम अभी समझू बने हो। ज्ञान की धारणा भी नम्बरवार होती हे। महारथी,घोड़ेसवार ,प्यादे यह पढ़ाई के लिए कहा जाता है। राजधानी स्थापन होती है। भक्ति मार्ग में है ही दुःख। भक्तिमार्ग वालों को तो कहेंगे ही रोलू। धक्के खाते हैं। तुम धक्कों से बच गये। वो हैं नास्तिक। तुम बाप को जानते हो। उठते बैठते चलते बाप को याद करते रहो। भक्तिमार्ग में तो कितनी तकलीफें हैं। गिरते ही जाते हैं। भक्ति भी पहले तो अव्यभिचारी बन गई है। मनुष्य भी अंधेरे में धक्के खाते रहते हैं। ज्ञान से सोझरा मिलता है। बाप कहते हैं तुम नम्बरवार परमभाग्यशाली हो। ओम।

5.7.67 रात्री क्लास – ऐसी2 लोड़ियां भी बहुत निकलेंगी। भीष्म ब्रह्मचारी रहते हैं। पवित्र तो बहुत ही रहते हैं। विलायत में भी बहुत होते हैं जो पवित्र ही रहते हैं। अब तो दुनियां को ही बदली होना है। ऐसे रूप और बसंत कहे जाते हैं। बाप भी रूप बसंत है। रूप बिंदी है और बसंत कितना है। अब तुम बच्चे जानते हो कि इस दुनियां के मनुष्य कैसे खलास हो जावेंगे। तुम साइलेंस से विश्व पर जीत पाते हो। वो साइंस से विश्व को खलास करते हैं। दो बिल्ले लड़ते हैं और माखन बंदर ही खा जाता है। यह भी यहां पर लगता है वो आपस में लड़ते हैं और माखन तुमको मिल जाता है। यह पढ़ाई कितनी सिम्पल है। बाप भी गुप्त है तो पढ़ाई भी गुप्त है। किसी को कहो कि भक्तिमार्ग दुर्गति मार्ग है तो बिगड़ पड़ेंगे। तुम बच्चों को तो गाली भी खाने में परवाह नहीं है। बाप को कितनी गालियां देते हैं। बाप कहते हैं कि यह भी मेरा पार्ट है। सदगति के लिए मुझको बुलाते हैं। फिर मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना करता हूँ। गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। गॉड फादर भी हुआ तो यूनिवर्सिटी भी हुई तो पतितपावन सदगति दाता भी हुआ। यह बातें किसी भी शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्रों में तो है आटे में लून। बाप कहते हैं कि मुझे ज्ञान का सागर कहते हैं। बाप सत है चेतन है नालेजफुल है तो जरूर नालेज ही देंगे। तुम बच्चे सारी दुनियां की रचता और रचना की आदि,मध्य,अंत को जानते हो। अब बाकी थोड़ा समय है। तुम साक्षी होकर देखते भी हो तो पार्ट भी बजाते हो। थोड़ी भी अब लड़ाई लगती है तो समझते हैं कि कहीं पर .....नहीं लग जावे। तैयारी तो करते रहते हैं ना। पुरानी दुनियां कितनी बड़ी है। नई दुनियां में तो बहुत थोड़े हैं। अब कितने सारे मनुष्य हैं। कितनी भाषायें हैं। वहां एक ही भाषा होगी। ओम।